Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=213
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE 2023, VOL- 11/77
https://doi.org/10.5281/zenodo.8171054

ग्रामीण व शहरी किशोरियों का शैक्षिक समायोजन एवं उनकी भविष्य की संभावनाएं

राज कमल[1] & डॉ. मोनव्वर जहां[2]

[1] पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना.

[2] प्राचार्या, वीमेंस ट्रेनिंग कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना.

Paper Received On: 21 JUNE 2023
Peer Reviewed On: 30 JUNE 2023
Published On: 01 JULY 2023

Abstract

किशोरावस्था का काल व्यक्ति के जीवन में निर्णायक माना जाता है। यह भविष्य की आधारशिला है। प्राय: यह देखा जाता है कि किशोरावस्था मानसिक अस्थिरता की अवस्था होती है। किशोरियों की मन:स्थिति के संदर्भ में कहा जाता है कि एक क्षण में उनका उत्साह उच्चतम शिखर को पहुँच जाता है तो दुसरे क्षण में उनकी मन:स्थिति उदासी की गहराई में डूबने लगती है। संवेगात्मक परिपक्वता के अभाव में मानसिक द्वन्द, मानसिक संघर्ष एवं मानसिक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यधपि आज हमारे संविधान एवं समाज में महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त है, परंतु आज भी यदा-कदा समाज में विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़ें क्षेत्रों में महिलाओं के साथ भिन्न व्यवहार देखा जा सकता है। किशोरियों के प्रति माता-पिता, अभिभावकों और समाज का विशिष्ट नकारात्मक अभिवृति, किशोरियों के सामाजिक और बौद्धिक विकास में बाधक है। ऐसा नकारात्मक रवैया समाज और सरकार की ओर से भी दिखाई देता है। घर के वातावरण का किशोरियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक समायोजन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बालिकाओं में सुरक्षा की भावना प्रेम व स्नेह से आती है जोकि वह अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से प्राप्त करते है। शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में समायोजन के सभी आयामों यथा- सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक में सार्थक अंतर है। इसके कई कारण है, जिनमें- किशोरियों के प्रति समाज की रुढ़िवादी मानसिकता, ग्रामीण परिवेश में किशोरियों की शिक्षा के प्रति कम जागरूकता, अवसर की अनुपलब्धता तथा स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का अभाव प्रभुख है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी किशोरियों के शैक्षिक समायोजन एवं भविष्य की उनकी संभावनाओं का अध्ययन करना है।

मुख्य बिंदु: ग्रामीण एवं शहरी परिवेश, किशोरियां, शैक्षिक समायोजन

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय

समायोजन मानवीय जीवन का आधार पक्ष है और इसी के आधार खंडों पर जीवन के भवन रूपी इमारत का निर्माण होता है। शिक्षा ही मानव जीवन एवं समायोजन में सहायक है। वर्तमान समय में तो शिक्षा की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। आज जिस प्रकार से महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है तथा महिला शिक्षा पर सरकारों द्वारा अनेक योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा है, उससे शिक्षा की भूमिका विशेषकर महिलाओं के सशक्तिकरण के विषय में और भी अधिक प्रभावी सिद्ध होती जा रही है। यधपि आज हमारे संविधान एवं समाज में महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त है, परंतु आज भी यदा-कदा समाज में विशेषकर ग्रामीण एवं पिछड़ें क्षेत्रों में महिलाओं के साथ भिन्न व्यवहार देखा जा सकता है। ग्रामीण परिवेश में समाज की रूढ़िवादिता तथा पितृसत्तात्मकता किशोर और किशोरियों में फ़र्क करती है। समाज परिवार की सत्ता आख़िरकार बेटे को ही सौपता है। समाज उन्हें शादी, परिवार, गृहस्थी से जोड़कर देखती है और उनकी स्वाधीनता के अवसर को कम कर देती है। पुरुष प्रधान समाज में सामाजिक नियमों का पालन करने, परम्पराओं का निर्वहन करने तथा जीविका चलाने से जोड़े रखती है। विभिन्न कारणों से शिक्षा प्राप्त कर रही किशोरियों के जीवन में समायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। किशोरावस्था की किशोरियों के जीवन में मुख्य रूप से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक परिवर्तन होने के कारण बहुत सी समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। अत: किशोरियों के समुचित विकास के लिए इनकी समस्याओं को जानकर इनका समाधान करना अत्यंत आवश्यक है। तभी राष्ट्र की उन्नति संभव है।

अध्ययन की आवश्यकता

आज बदलते समाज में किशोरियों का शैक्षिक समायोजन एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। व्यवहार संबंधी समस्याएं तथा शिक्षण संस्थानों से अनुपस्थिति की संख्या तेजी से बढ़ रही है। जिससे उनका प्रदर्शन, नकारात्मक और परोक्ष रूप से समाज के विकास और देश की उत्पादकता को प्रभावित कर रहा है। किशोरियों के प्रति माता-पिता, अभिभावकों और समाज का विशिष्ट नकारात्मक अभिवृति, किशोरियों के सामाजिक और बौद्धिक विकास में बाधक है। ऐसा नकारात्मक रवैया समाज और

सरकार की ओर से भी दिखाई देता है। इसलिए, किशोरियों (ग्रामीण और शहरी) के शैक्षिक समायोजन और समाज के लिए उनकी भविष्य की संभावनाओं पर अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि वे भविष्य की माताएँ हैं और उनमें से कुछ भविष्य की नेता हैं और इसलिए वे समाज को आकार देने तथा देश में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि परिवार, स्कूल, समाज और सरकारी पाठ्यक्रम एवं योजनाओं में, इस समूह पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि समाज और देश समृद्ध हो सके।

किशोरावस्था में भावात्मक विकास

किशोरावस्था में भावनात्मक विकास और संज्ञानात्मक विकास के बीच घनिष्ठ संबंध होता है (मासी पोली और मार्चेस्ची, 1994)। भावनात्मक विकार, बौद्धिक क्रियाकलाप में बाधक है तथा संज्ञानात्मक कठिनाइयां, व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण कारक हैं। संज्ञानात्मक शिथिलता, वास्तविकता की अवधारणा के विकास को प्रभावित करती है और यह किशोरियों के भावनात्मक तनाव के साथ-साथ यौवन परिवर्तन तथा व्यक्ति एवं बाहरी दुनिया के बीच अवर्णित संबंधों से सफलतापूर्वक निपटने की क्षमता को कम करता है।

अमेरिकन मनश्चिकित्सीय संघ (1994) एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन (1992) के अनुसार ये विकासात्मक जोखिम उन व्यक्तियों में भी मौजूद हैं जो बौद्धिक सीमा रेखा के आस-पास है तथा जिनका जिनका आई.क्यू. 71 से 84 के बीच है। वे जिनका मानक विचलन औसत से एक कम हैं, लेकिन मानसिक मंदता की नैदानिक श्रेणी में न आएं (आईक्यू 70 से कम) परंतु जिनका मानक विचलन औसत से दो से अधिक कम है, उनमें अधिक है।

अमेरिकन मनश्चिकित्सीय संघ (1994) के अध्ययन में वे गरीब बुद्धिजीवी भी सम्मिलित हैं जिन्हें अतिरिक्त शर्तों के साथ नैदानिक ध्यान कार्य भी केंद्रित हो सकता है। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि किशोरावस्था एक मनोवैज्ञानिक चरण है, जब संज्ञानात्मक विकास तेजी से होता है और जीवन की इस अवधि में विकसित अवधारणाएँ एवं संप्रत्यय व्यक्ति के भावी जीवन को बहुत प्रभावित करता है, साथ ही चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

किशोरावस्था में समायोजन

किशोरावस्था में समायोजन का व्यापक महत्व है। किशोरावस्था एक ऐसा काल है जिसका प्रभाव व्यक्तित्व का निर्माण; प्रत्यक्ष और वास्तविक जीवन में बहुत लम्बे समय होता है। उचित समायोजन संतुलित व्यक्तित्व के साथ-साथ स्वस्थ मानसिक जीवन के लिए सहायक है। किशोरावस्था के दौरान पारिवारिक संबंधों के विचार बदल रहा है। किशोरावस्था पारिवारिक संबंधों का पुरातन दृष्टिकोण में परिवर्तन तथा संबंध के जुड़ाव पर अधिक जोर देता है। इस चरण में कोई असामान्यता यहां तक कि कोई एक बीमारी; किशोरियों में अवशिष्ट या अव्यक्त हो जाता है जो उनके विकास एवं आगे बढ़ने के अवसर तथा उनके पर्यावरण के साथ मानसिक समायोजन की प्रकृति पर निर्भर करता है। समायोजन, व्यवहार की वह प्रक्रिया है जिसमें किशोरियां अपने और अपने वातावरण के मध्य समन्वय स्थापित करती है एवं आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करती है। सामंजस्य में न्यूनता तथा अधिकता किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

किशोरियों का शैक्षिक समायोजन

हमारे सभ्य समाज में समायोजन की समस्या इतनी महत्वपूर्ण और जटिल हो गई है जिससे मनोवैज्ञानिकों ने इसे समझने में गहरी रूचि प्रकट की है। किशोरियों द्वारा समायोजन की जटिल समस्या का सामना किया जाता है, अत: इस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। वर्तमान पीढ़ी विशेष रूप से विद्यार्थी- भ्रम, संक्रमण, अनुशासनहीनता और तनाव की विशेषता वाले एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं। इसने सामान्य रूप से व्यवहारवादियों और मनोवैज्ञानिकों के समक्ष एक विशिष्ट एवं गंभीर समस्या खड़ी कर दी है।

इस आधुनिक युग में शैक्षिक उपलब्धि को व्यक्तिगत प्रगति का कुंजी माना जाता है। इसलिए पूरी शिक्षा प्रणाली शैक्षिक उपलब्धि के इर्द-गिर्द घूमती है। परिवार बच्चे की पहली पाठशाला और माता-पिता पहले शिक्षक होते हैं। अगर माता-पिता अपने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के लिए अनुकूल वैकल्पिक सुविधाजनक वातावरण प्रदान करना चाहते हैं तो उन्हें अपने बच्चे के लिए शैक्षिक प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। माता-पिता की एक जन्मजात जिम्मेदारी होती है कि वे बच्चे को उचित प्रेरणा प्रदान करें, क्योंकि किशोरियों की प्रत्येक उपलब्धि के

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पीछे मौजूद प्रेरणा किसी भी महत्वाकांक्षी उपक्रम को पूरा करने तथा उपयुक्त आधार प्रदान करने के लिए आवश्यक है। माता-पिता और बच्चे का संबंध बच्चे की शैक्षणिक उपलब्धि में एक अभिप्रेरणात्मक कारक के रूप में कार्य कर सकता है।

किशोरियां अवास्तविक रूप से बड़ी होने की आकांक्षा रखती हैं और आदर्शवादी रूप से सोचती हैं, भले ही यह बहस उनके व्यावहारिक पहलुओं को स्पर्श करता हो। जब वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल रहती हैं तो उनकी उपलब्धि उनमें संतुष्टि लाती है। उनकी उपलब्धियाँ उनमें व्यक्तिगत संतुष्टि के साथ-साथ सामाजिक पहचान भी बनाती है इसलिए उपलब्धियां, चाहे खेल, स्कूल, काम या सामाजिक गतिविधियों में हो, उनमें अत्यधिक रूचि उत्पन्न करती है।

घर के वातावरण का किशोरियों की मानसिक स्वास्थ्य समायोजन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। बालिकाओं में सुरक्षा की भावना प्रेम व स्नेह से आती है जोकि वह अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से प्राप्त करते है। उनकी सुरक्षा की भावना का विस्तार होता है यदि उनकी आवश्यकताओं का अच्छी तरह ख्याल रक्खें।
कुमार, धर्मेन्द्र और रानी, नीलाक्षी (2017) ने अपने शोध अध्ययन शीर्षक "ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" में पाया कि शहरी क्षेत्र की बालिकाओं में समायोजन के सभी आयामों यथा- सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक में सार्थक अंतर है। अत: शहरी क्षेत्र की बालिकाएं बालकों के साथ उठने-बैठने, प्रश्न पूछने पर द्वेष, क्रोध का प्रदर्शन नहीं करती एवं पारस्परिक मेल-जोल के कारण समायोजन के तीनों आयामों सांवेगिक, सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक समायोजित है। शहरी क्षेत्र की विज्ञान वर्ग की बालिकाओं का कला वर्ग की अपेक्षा अधिक अच्छा सामाजिक समायोजन है जो छात्रों के साथ सहयोग तथा मेल-जोल की भावना के कारण था। शर्मा, नीरजा एवं पंडेगावकर, कविता (2013) ने अपने शोध अध्ययन शीर्षक "किशोर बालिकाओं में सुरक्षा की भावना एवं समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन" में पाया कि किशोर बालिकाओं में सुरक्षा की भावना एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह संबंध है।साथ ही उन्होंने पाया कि किशोर बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह संबंध नहीं है।

किशोरियों की समस्याओं का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि इनकी संवेगात्मक समस्याएँ सामान्य स्तर की है लेकिन शहरी छात्राओं की समस्याएँ ग्रामीण

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

छात्राओं से उच्च है। इन समस्याओं को संवेगात्मक प्रशिक्षण द्वारा दूर किया जा सकता है। जैसे माता-पिता को प्रेमपूर्ण एवं सहयोग पूर्ण व्यवहार, किशोरियों की मान्यताओं को महत्त्व देना, उनकी सामर्थ्य के अनुरूप आशा करना, उन्हें निर्णय लेने में उचित स्वतंत्रता प्रदान करना, उन्हें शुद्ध शांतिपूर्ण एवं शैक्षिक वातावरण प्रदान करना चाहिए।

निष्कर्ष एवं सुझाव

- किशोरियों के प्रति समाज की रुढ़िवादी मानसिकता में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। किशोरियों में समायोजन स्तर को बढ़ाने के लिए सामाजिक एवं पारिवारिक सहयोग दिया जाना चाहिए।
- ग्रामीण परिवेश में किशोरियों की शिक्षा के प्रति जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।
- किशोरियों की शिक्षा, खेलने तथा कार्य करने के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
- किशोरियों को अपनी इच्छानुसार जीवन यापन व निर्णय लेने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- किशोरियों में व्याप्त विभिन्न प्रकार के असंतोषों को जानने तथा विचार-विमर्श द्वारा इनको दूर करने हेतु सभाओं का आयोजन किया जाना चाहिए तथा इनको अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाए जाने की आवश्यकता है।
- किशोरियों में उनके कार्य के प्रति अधिक रूचि बढ़ाने, उनकी कुशलता में वृद्धि हेतु विशेष मार्गदर्शन तथा उनमें आत्मविश्वास की भावना को विकसित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अमेरिकन मनश्चिकित्सीय संघ (1994). डायग्नोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैन्युअल ऑफ़ मेंटल डिसऑर्डर्स, 4th एडिशन, वाशिंगटन डीसी.

कुमार, धर्मेन्द्र और रानी, नीलाक्षी (2017). ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन आल सब्जेक्ट्स इन मल्टी लैंग्वेजेज, वॉल्यूम 5, इशू 2, *ISSN: 2321-2853.*

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्व स्वास्थ्य संगठन (1992). क्लासिफिकेशन ऑफ़ मेंटल एंड बेहविऔरल डिसऑर्डर्स: क्लिनिकल डिस्क्रिप्शन्स एंड डायग्नोस्टिक गाइडलाइन्स, रॉयल कॉलेज ऑफ़ साइक्रियट्रिस्टस, 01 जनवरी 1992.

मासी पोली और मार्चेस्ची (1994). कगनिटीव फंक्शनिंग इन अडोलेस्सेंट डिप्रेशन, मिनेर्वा साईक्रिएटिका, 35 (4): 221-9.

शर्मा, नीरजा एवं पंडेगावकर, कविता (2013). किशोर बालिकाओं में सुरक्षा की भावना एवं समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ फंडामेंटल एंड एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम 1, इशू 6, ISSN 2320-7973.

Cite Your Article as:

Raj Kamal, & Monvver Jaha. (2023). GRAMIN V SHHARI KISHORIYO KA SHAIKSHIK SAMAYOJAN EVUM UNKI BHVISHYA KI SAMBHAVNAYE. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 11(77), 227–233. https://doi.org/10.5281/zenodo.8171054

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies